Question 03 शब्द का स्वरूप (Nature) और वर्गीकरण (Classification) व्याख्या कीजिए।

Answer:— न्याय दर्शन या शास्त्र में शब्द को ज्ञान प्राप्ति का चौथा प्रमाण माना गया है। शब्द के द्वारा प्राप्त ज्ञान शब्द ज्ञान कहलाता है। शब्दों के माध्यम से ज्ञान को अभिव्यक्ति लिखकर या बोलकर की जाती है। परन्तु, सभी प्रकार के शाब्दिक ज्ञान यथार्थ (Real) नहीं कहे जा सकते। इनमें से अधिकांश अयथार्थ होते हैं। केवल विश्वसनीय व्यक्ति या आप्त पुरुष के शाब्दिक कथन को ही प्रामाणिक माना जाता है।

अब प्रश्न उठता है कि आप्त पुरुष कौन है?

आप्त पुरुष वह है जो स्वयं किसी वस्तु का साक्षात्कार करके उसका ज्ञान प्राप्त करता है और लोककल्याण के लिए उस यथार्थ ज्ञान (Real knowledge) को अन्य लोगों के समक्ष प्रस्तुत करता है। 'आप्त' उस ज्ञान को कहा जाता है जिसे व्यक्ति स्वयं अपने अनुभव से प्राप्त करता है। तर्कसंग्रह के अनुसार 'आप्त वाक्यं शब्दः।' अर्थात आप्त पुरुष का वाक्य या कथन 'शब्द' प्रमाण है। गौतम ने भी न्याय-

Scanned with CamScanner

सूत्र में कहा है — 'आप्तोपदेश: शब्द:।' वेद, पुराण, तथा अन्य धर्मशास्त्र में ऋषी-मुनियों द्वारा दिये गये उपदेश शब्द प्रमाण कहलाता है।

आप्त पुरुष स्वयं अपने अनुभव के द्वारा प्राप्त ज्ञान को जनकल्याण के लिए प्रसारित करता है। आप्त पुरुषों के कथन का सही अर्थ — समझना अति-आवश्यक है। इनके अनुसार शाब्दिक ज्ञान की उत्पत्ति आप्त वाक्य के वास्तविक अर्थ जानने पर निर्भर है और इसकी प्रामाणिकता वक्ता के विश्वसनीय होने पर निर्भर है। वेद, पुराण, धर्मशास्त्र आदि में इन आप्त पुरुषों के कथन शब्द प्रमाण के ज्वलन्त उदाहरण है।

शब्दों का वर्गीकरण

शब्द दो प्रकार के होते हैं। शब्द कान के द्वारा सुने जाते हैं। (i) ध्वन्यात्मक शब्द और (ii) वर्णात्मक शब्द

(i) **ध्वन्यात्मक शब्द :—** ध्वन्यात्मक शब्द वे हैं जिसमें केवल ध्वनि सुनाई पड़ती है अर्थात इसमें अक्षर स्फुटित नहीं होता। इसमें अर्थ का स्पष्ट ज्ञान नहीं हो पाता है। जैसे :- किसी वाद्ययन्त्र का अस्पष्ट शब्द।

Scanned with CamScanner

FEBRUARY 2016
02 TUESDAY

ii **वर्णात्मक शब्द :—** वर्णात्मक शब्दों में कंठ, तालु इत्यादि के संयोग से स्वर-व्यंजनों का उच्चारण होता है। जैसे किसी व्यक्ति की आवाज। वर्णात्मक शब्द दो प्रकार के होते हैं :—

(a) निरर्थक वर्णात्मक शब्द
(b) सार्थक वर्णात्मक शब्द।

निरर्थक वर्णात्मक शब्द अर्थहीन होता है और इससे कोई निश्चित अर्थ नहीं निकलती। उदाहरण स्वरूप :- उम्, बुम्, एह आदि।

सार्थक वर्णात्मक शब्दों से कुछ विशेष अर्थ निकलते हैं। जैसे :- घोड़ा, बन्दर, कौवा इत्यादि। शब्दों के अर्थ व्यक्त करने की शक्ति को 'संकेत' कहा जाता है। संकेत के प्रकार होते हैं :-

(क) आजानिक संकेत और (ख) आधुनिक संकेत

(क) **आजानिक संकेत** : ईश्वरप्रदत्त संकेत आजानिक संकेत हैं। सृष्टि के आदिकाल में ही ईश्वर ने शब्दों में आजानिक संकेत रख छोड़ा है। इस प्रकार के संकेत के उत्पन्न करने में मनुष्य का कोई हाथ नहीं है। जैसे 'घट' में अर्थ व्यक्त करने की क्षमता अर्थात संकेत आदिकाल से ही विद्यमान है। आचार्यों ने आजानिक संकेत को 'शक्ति' के नाम से संबोधित किया

WRITING IS NOTHING MORE THAN A GUIDED DREAM

Scanned with CamScanner

है। न्याय दर्शन का अटूट विश्वास है कि ईश्वर ने आत्मानिक संकेत निश्चित रूप से शब्दों में भर दिया है।

एक आधुनिक संकेत। — यह संकेत मनुष्य प्रदत्त है। मनुष्य स्वेच्छा अनुसार शब्दों में अर्थ व्यक्त करने की क्षमता मान लेता है। इसे ही आधुनिक संकेत कहते हैं। इस संकेत की उत्पत्ति में ईश्वर का कोई हाथ नहीं रहता। जैसे- कोई व्यक्ति अपने पुत्र का नाम पटेल रखता है तो कोई अपने कुत्ते को मोती रखता है। ये सब आधुनिक संकेत के उदाहरण हैं। ये सामयिक होते हैं।

न्यायशास्त्र में 'शब्द' का वर्गीकरण दो प्रकार से होता है — 1 ज्ञान के विषय के अनुसार और 2 ज्ञान के स्रोत के अनुसार।

1 ज्ञान के विषय के अनुसार शब्द के दो भेद हैं: (क) दृष्टार्थ और (ख) अदृष्टार्थ।

ज्ञान के स्रोत या उत्पत्ति के अनुसार शब्द के दो प्रकार हैं - लौकिक तथा अलौकिक (वैदिक)

(क) दृष्टार्थ :- दृष्टार्थ शब्द वह है जो इस विश्व के प्रत्यक्ष होने वाले पदार्थों के विषय में

Scanned with CamScanner

साक्ष्य देता है। इस प्रकार के शब्द का अर्थ (विषय) इस वर्तमान विश्व में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई पड़ता है। यदि कोई विश्वसनीय व्यक्ति गंगा या कुतुबमीनार के विषय में कुछ कहता है तो उसके शब्द 'दृष्टार्थ' कहे जाएँगे। क्योंकि गंगा और कुतुबमीनार का प्रत्यक्ष इस विश्व में किया जा सकता है।

(ख) अदृष्टार्थ :-

'अदृष्टार्थ' शब्द उसे कहते हैं जो हमें इन्द्रियातीत (इन्द्रियों से परे) पदार्थों के विषय में ज्ञान देता है। इन प्रकार के शब्दों का अर्थ इस विश्व के परे अर्थात अलौकिक विषयों से संबंध रखता है। जिन विषयों के बारे अदृष्टार्थ शब्द होते हैं उनका प्रत्यक्षीकरण इस विश्व में सम्भव नहीं है फिर भी इनकी सत्यता में हमें संदेह नहीं रहता, क्योंकि वे आप्त पुरुष (विश्वसनीय व्यक्ति) के कथन होते हैं इन्हीं आप्त पुरुषों के दृष्टार्थ शब्दों को भी यथार्थ और सत्य मानते हैं।

उदाहरण स्वरूप :- वैज्ञानिकों के अणु, परमाणु आदि के विषय में कथन अदृष्टार्थ शब्द हैं। इसी प्रकार सन्त, महात्माओं और विचारकों के आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग, नरक, मोक्ष, पुनर्जन्म आदि के

FEBRUARY 2016 FRIDAY 05

विषय में दिये गये कथन आप्तवाक्य शब्द कहे जाते हैं। अणु, परमाणु, आत्मा, परमात्मा इत्यादि का प्रत्यक्ष नहीं हो पाता। फिर भी आप्त वचन होने के कारण इनकी सत्ता में हमारा विश्वास रहता है।

लौकिक शब्द :- इस विश्व में लोगों के वचन लौकिक शब्द कहे जाते हैं। लौकिक शब्द सांसारिक लोगों के कथन होने के कारण सत्य और असत्य दोनों हो सकते हैं। केवल आप्त पुरुषों के वचन ही सत्य होते हैं। परन्तु साधारण मनुष्य के वचन संदिग्ध (doubtful) होते हैं। ये सत्य भी हो सकते हैं और असत्य भी। जैसे : अखबार की कुछ खबरें सत्य और कुछ असत्य होती हैं।

सभी भारतीय विचारक 'लौकिक शब्द' को प्रामाणिक नहीं मानते। इसका कारण यह है कि लौकिक शब्द प्रायः संदेहात्मक (Doubtful) रहते हैं। इसी कारण वेदान्तदर्शन लौकिक शब्द को प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं करता।

अलौकिक शब्द अथवा वैदिक शब्द :-

वेदों, अन्य धार्मिक ग्रन्थों तथा ईश्वर के कथन 'वैदिक शब्द' अथवा अलौकिक शब्द कहे

SUCCESS PRODUCES SUCCESS, JUST AS MONEY PRODUCES MONEY.

जाते हैं। ऐसा समझा जाता है कि वेद ईश्वर-कृत है और इस कारण वैदिक या अलौकिक शब्द साक्षात ईश्वर के कथन होने के कारण सदैव सत्य माने जाते हैं। वैदिक कथन/वाक्य तीन प्रकार के होते हैं:-

(i) विधिवाक्य (ii) अर्थवाद तथा (iii) अनुवाद।

(i) विधिवाक्य आदेश या आज्ञासूचक वाक्य होता है जैसे जो स्वर्ग पाने की इच्छा रखे वह अग्निहोत्र करे।

(ii) अर्थवाद:- जिसके द्वारा कर्मों की स्तुति, निन्दा, प्रकृति तथा पुराकल्प की अभिव्यक्ति होती है। और यानी तरह का भी होता है। या अमुक यज्ञ करने से देवों की विजय हुई है।

(iii) अनुवाद:- इसमें वेद विहित वाक्यों की पुनरावृत्ति अर्थानुवाद और शब्दानुवाद द्वारा होती है।

वैदिक शब्द ईश्वर के साक्षात कथन

हैं। इसलिए इनकी सत्यता में संदेह नहीं किया जा सकता। ये सदैव सत्य रहते हैं। इनकी सत्यता स्वयंसिद्ध होती है। इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि लौकिक शब्द की अपेक्षा वैदिक शब्द अधिक विश्वसनीय होते हैं।

IT IS MUCH SAFER TO OBEY THEN TO RULE

Scanned with CamScanner

शब्द के स्वरूप :- (Characteristics of word)

पदों के समूह को वाक्य कहते हैं अर्थात: वाक्य पदसमूहः। जैसे राम का भाई मोहन है। यह वाक्य कई पदों (शब्दों) के संयोग से बना है पदों के समूह होने से भी वह वाक्य नहीं बन जाता। पदों के वैसे समूह को भी वाक्य कहते हैं जिससे एक निश्चित अर्थ निकलता हो। किसी वाक्य के अर्थ को शब्दबोध कहते हैं।

किसी वाक्य के सार्थक होने के लिए नैयायिक चार बातों को आवश्यक बतलाते हैं:-

(1) आकांक्षा (2) योग्यता (3) सन्निधि और (4) तात्पर्य

इनमें से प्रथम तीन (आकांक्षा, योग्यता और सन्निधि) बातें प्राचीन न्याय के अनुसार वाक्य की सार्थकता के लिए आवश्यक है। नव्य न्याय के अन्तिम लक्षण (तात्पर्य) को भी वाक्य की सार्थकता के लिए आवश्यक बतलाया गया है। इस प्रकार ये चारों लक्षण किसी वाक्य को सार्थक बनाने के लिए आवश्यक समझे गये हैं।

1 आकांक्षा (Curiosity) :- वाक्य शब्दों के मेल से बनते हैं। इसलिए आवश्यक है कि किसी वाक्य के शब्दों में पारस्परिक आकांक्षा हो। दूसरे शब्दों में, इसके उद्देश्य और विधेय में परस्पर अन्वय होना अनिवार्य है। जब तक यह आकांक्षा (शब्दों के साथ आकांक्षा) पूरी नहीं होती तब तक वाक्य

THE BALLOT IS STRONGER THAN THE BULLET

Scanned with CamScanner

सार्थक नहीं कहा जा सकता।

जैसे: यदि कोई कहे लाओ तो इसे सार्थक वाक्य नहीं कहेंगे। क्योंकि इस शब्द को अन्य शब्दों की आकांक्षा अथवा अपेक्षा है, यदि कहा जाए कि पुस्तक लाओ तब यह सार्थक वाक्य बन जाता है।

2 योग्यता (Fitness या Suitability):

सार्थक वाक्य के लिए आकांक्षा के साथ-साथ योग्यता भी नितांत आवश्यकता है। अर्थात् जिन शब्दों के मिलने से सभी अर्थ निकले उनमें साथ रहने की योग्यता समझनी चाहिए। किसी वाक्य के शब्दों में पारस्परिक विरोध या असंगति नहीं होनी चाहिए।

जैसे:- खेतों की सिंचाई आग से होती है यह वाक्य निरर्थक है। खेतों की सिंचाई आग से नहीं बल्कि पानी से होती है। अतः योग्यता आवश्यक है।

3 सन्निधि या समीपता (Nearness or proximity): यदि किसी वाक्य के शब्दों में योग्यता और आकांक्षा भी हो लेकिन समीपता नहीं हो तो वाक्य सार्थक नहीं सकता। अतः वाक्य की सार्थकता के लिए इसके शब्द परस्पर-निकट (सन्निधि) हों।

जैसे:- राम खड़ा है यह एक सार्थक वाक्य है क्योंकि इसके शब्दों में सन्निधि (समीपता) है।

THE NATION THAT DESTROYS ITS SOIL DESTROYS ITSELF

Scanned with CamScanner

यदि एक पृष्ठ पर 'राम' लिखें और दूसरे पृष्ठ पर 'पढ़ता है' लिखें तो यह सार्थक वाक्य नहीं कहा जायेगा।

4. तात्पर्य (Intention of the speaker)

:— किसी वाक्य को सार्थक तभी कहा जा सकता है जब वक्ता के कथन में आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि और तात्पर्य चारों का सामंजस्य हो। अगर ये चारों में सामंजस्य नहीं होगी तब वाक्य का अर्थ के बदले अनर्थ हो सकता है।

जैसे :— यदि कोई खाने के समय 'सैन्धव' माँगें तो इसका अर्थ है कि वह नमक माँग रहा है इसी प्रकार युद्ध के लिए तैयार योद्धा जब सैन्धव माँगे तो इसका अर्थ यह कि वह 'घोड़ा' माँग रहा है। यदि हम वक्ता के अभिप्राय को बिना समझे खाने के समय घोड़ा और युद्ध के समय नमक उपस्थित करते हैं तो इसमें सार्थक वाक्य नहीं बन सकता। इसलिए किसी वाक्य के मूल में वक्ता का अभिप्राय समझना सार्थक वाक्य की आवश्यक शर्त है।

शब्द एक प्रमाण के रूप में :—

चार्वाक और बौद्ध को छोड़कर अन्य सभी

Scanned with CamScanner

यदि एक पृष्ठ पर 'राम' लिखें और दूसरे पृष्ठ पर 'पढ़ता है' लिखें तो यह सार्थक वाक्य नहीं कहलायेगा।

4. तात्पर्य (Intention of the speaker)

:— किसी वाक्य को सार्थक तभी कहा जा सकता है जब वक्ता के कथन में आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि और तात्पर्य चारों का समन्वय हो। अगर ये चारों में समीपता नहीं होगी तब वाक्य का अर्थ के बदले अनर्थ हो सकता है।

जैसे :— यदि कोई खाने के समय 'सैन्धव' माँगे तो इसका अर्थ है कि वह नमक माँग रहा है। इसी प्रकार युद्ध के लिए तैयार योद्धा जब सैन्धव माँगे तो इसका अर्थ यह कि वह 'घोड़ा' माँग रहा है। यदि हम वक्ता के अभिप्राय को बिना समझे खाने के समय घोड़ा और युद्ध के समय नमक उपस्थित करते हैं तो इसमें सार्थक वाक्य नहीं बन सकता। इसलिए किसी वाक्य के मूल में वक्ता का अभिप्राय समझना सार्थक वाक्य की एक आवश्यक शर्त है।

शब्द एक प्रमाण के रूप में :—

चार्वाक और बौद्ध को छोड़कर अन्य सभी

Scanned with CamScanner

11 FEBRUARY THURSDAY

भारतीय दर्शन शब्द को ज्ञान प्राप्त करने का प्रमाण के रूप में स्वीकार करते है।

चार्वाक मात्र 'प्रत्यक्ष' को ज्ञान प्राप्ति का साधन मानता है। बौद्ध दार्शनिक भी शब्द को ज्ञान प्राप्ति का साधन या प्रमाण नहीं मानता। अन्य सभी भारतीय दर्शन शब्द को प्रमाण स्वीकार किया है। शब्द प्रमाण की स्वतन्त्रता अनुभव द्वारा भी सिद्ध होती है। अतः शब्द एक स्वतन्त्र प्रमाण है।